श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग ।
ता दिन थें पसरी दया, पल पल चढ़ते रंग ॥
(कलश हिंदी १/१)

निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज
द्वारा जागनीके गूढ़ रहस्य समझते हुए
महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

दिसम्बर २००९

वर्ष ८१ श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर अंक १२

www.krishnapranami.org

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सव-मुंबई

दीप प्राकट्य कर पारायण एवं सभामंचका
मंगल प्रारम्भ करते हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं सन्त गुरुजन

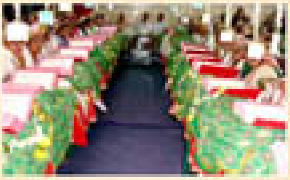

श्री तारतम सागरके १०८ सामूहिक पारायणके प्रारम्भ एवं पूर्णाहुतिके विविध दृश्य

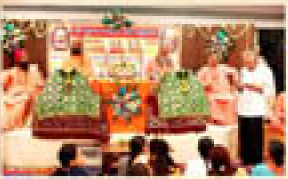

सभा मंच पर उपस्थित सुन्दरसाथको आशीर्वाद प्रदान करते
हुए परम पूज्य आचार्य महाराजश्री एवं सभाके विविध दृश्य

श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

वि.सं : २०६६ निजानन्दाब्द : ४२८ बुद्धजी शाके : ३३२

वर्ष ८१ **दिसम्बर २००९** अंक १२

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम, खीजड़ा मन्दिर
जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक (मानद्) : डॉ. प्रवीण चन्द्र परीख

सम्पादक मण्डल : शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्य तथा श्री कनकराय व्यास

वार्षिक शुल्क रु. १००/-	१५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/-

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१
फोन : (०२८८) २६७ २८२९ फेक्स (०२८८) २५५ १३५३
E-mail : navtan@sancharnet.in, navtanpuri@gmail.com
website : www.krishnapranami.org/www.krishnadham.org

नूतनवर्षाभिनन्दन

अन्तरराष्ट्रिय नूतन वर्ष २०१० आप सभी सुन्दरसाथके लिए सुख, शान्ति एवं समृद्धि लेकर आए, सभी सुन्दरसाथ धर्ममें एवं अपने व्यवसायमें आगे बढ़ें तथा सबकी मनोकामनायें पूर्ण हो ऐसी शुभकामनाके साथ श्री राजजीके चरणोमें प्रार्थना ।

– श्री ५ नवतनपुरी धाम

ए माया छे अति बलवंती

पूज्य पाद् जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

माया शब्दके श्रवण मात्रसे भी हम मिथ्या, भ्रान्ति, छल, कपट आदिकी कल्पना करने लग जाते हैं। इसकी परिभाषामें कहा गया है कि यह असत्य अर्थको प्रकाशित करती है। यथा, **असदर्थप्रकाशिनी माया**। माया शब्दमें **मा** और **या** दो अक्षर हैं। संस्कृत भाषामें '**मा**' का अर्थ होता है नहीं और '**या**' का अर्थ होता है जो। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जो यथार्थमें नहीं है मात्र दिखती है वह माया है। अथवा जिसका जैसा स्वरूप है उसको उसी रूपमें प्रकाशित न कर दूसरे (ठीक विपरीत) रूपमें प्रकाशित करनेवाली शक्ति माया है। माया स्वयं मिथ्या है और मिथ्याको ही प्रकाशित कर सकती है। किन्तु अज्ञान (माया) के कारण लोग मिथ्याको ही सत्यके रूपमें समझने लगते हैं।

मायाको अज्ञान भी कहा है। इसी अज्ञानके कारण झूठको सत्य और सत्यको झूठ माना जाता है। महामति श्री प्राणनाथजीने मायाको नींद भी कहा है और इसके अनेक नाम दिए है,

मोह अज्ञान भरमना, करम काल और सुंन।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन ॥

(कलश हिन्दी २४/१९)

अर्थात् मोह, अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल, शून्य, निराकार, निर्गुण आदि सभी नाम नींदके हैं। मूलतः यह माया ही है। मायाके कारण मोह होता है। मोहके कारण ज्ञान ढक जाता है और अज्ञानकी वृद्धि होती है। अज्ञानके बढ़नेसे भ्रान्ति उत्पन्न होती है जिससे निम्न कोटिके कर्म होने लगते हैं। ऐसे कर्म कालक्रममें शून्यमें विलीन हो जाता हैं। शून्य, निराकार, निर्गुण, निरञ्जनका अस्तित्त्व भी मायाके कारण ही है। यथार्थतः महाप्रलयमें जिनका नाश हो जाता है उन सभीका अस्तित्त्व मायाके कारण है। इसको आदि और अनादि भी कहा है। यथा,

ए माया आद अनाद की, चली जात अन्धेर ।

मायाको आदि कहनेका कारण यह है कि यह सृष्टिके आदिमें पैदा हुई है । यथा,

उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी ।
इत अक्षरको विलस्यो मन, पांच तत्त्व चौदै भुवन ॥

अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीकी आज्ञासे सर्वप्रथम अक्षर ब्रह्मके द्वारा मोह तत्त्व उत्पन्न हुआ । उसीमें अक्षरके मनने प्रवेश किया जिससे पाँच तत्त्व और तीन गुण प्रकट हुए । जिनके मिश्रणसे यह सम्पूर्ण सृष्टि बनी हुई है । जैसे ही अक्षर ब्रह्म अपने मन की वृत्तियोंका संवरण करते हैं उसी समय यह चराचर सृष्टि मिट जाती है । इसको महाप्रलय अथवा आत्यन्तिक प्रलय कहते हैं । यद्यपि प्रलय भिन्न-भिन्न हैं (यथा, नित्य, नैमित्तिक, प्राकृतिक और आत्यन्तिक) और वे निश्चित समयमें अपना प्रभाव दिखाते हैं, तथापि महाप्रलयमें उक्त सभी प्रलय समा जाते हैं । महाप्रलय या आत्यन्तिक प्रलय परिवर्तनशील जगतका अन्तिम परिवर्तन है । मुख्यतः यह अक्षर ब्रह्मकी मनोवृत्तिका संवरण है ।

मायाको अनादि इसलिए कहा गया है कि यह मूलतः अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माकी आज्ञासे उत्पन्न होती है और इसका बीज अक्षरब्रह्मके मनमें विद्यमान है । ब्रह्मांडोंको बनाना, थोड़े समयके लिए टिकाना और मिटाना यह अक्षर ब्रह्मका नित्य कार्य है । जिस प्रकार बालक स्वभावतः कुछ वस्तुओंको एकत्र कर कुछ बनाता है और दूसरे ही क्षण उसे मिटाता भी है । ब्रह्माण्डोंको बनाने और मिटानेके कारण अक्षर ब्रह्मको बाल स्वभाव अथवा बाल चरित्र कहा गया है । यथा,

श्री भगवानजी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी ईच्छासों प्रकृत ।

अक्षरब्रह्मकी ईच्छाको मूल प्रकृति कहा गया है । इसीसे यह दृश्यमान जगत अस्तित्वमें है । किन्तु अक्षर ब्रह्म भी अक्षरातीतकी आज्ञासे ही ब्रह्माण्डोंको बनाते हैं और मिटाते हैं । इसलिए माया अक्षरातीतकी आज्ञासे ही उत्पन्न होती है । इसकी शक्ति अपार है । तभी महामतिने कहा है,

ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धनी थकी ।
मुनि जनने मनाव्या हार, शिव ब्रह्मादिक न लहे पार ॥

(रास १/४)

अक्षरातीतकी आज्ञासे उत्पन्न होनेके कारण यह शक्तिशालिनी है और संसारके जीव इसका पार नहीं पा सकते हैं। सामान्य व्यक्तियोंकी बात ही क्या करें ऋषि-महर्षि भी इसके प्रभावसे नहीं बच सके। इतना ही नहीं पातालसे लेकर सतलोक पर्यन्त एवं देवी देवताओंसे लेकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित भगवान नारायण पर्यन्त सभी मायासे प्रभावित हैं । संक्षेपमें कहें तो माया यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही नहीं ऐसे अनन्त ब्रह्माण्ड एवं उनके स्वामी भगवान नारायणको भी नहीं छोड़ रही है । अक्षरब्रह्म द्वारा रचित सम्पूर्ण सृष्टि माया द्वारा प्रभावित है । इसका कारण यह है कि यह सम्पूर्ण सृष्टि माया द्वारा ही बनी है और मायाका ही विस्तार है ।

ऐसी शक्तिशालिनी मायामें ब्रह्मात्माओंका आगमन हुआ है इसलिए वे भी इसके प्रभावसे अछूते नहीं हैं। इसलिए ब्रह्मात्माएँ भी स्वयंको, अपने धनीको और अपने धामको भी भूल कर मायामें लिप्त बनी हुई हैं । उनको जागृत करनेके लिए श्री राजजीने श्री श्यामाजीको सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके रूपमें भेजा। उन्होंने मायामें रहते हुए भी अपने धनीकी खोज कर ब्रह्मात्माओंको मायासे पार होनेका मार्ग दिखाया। श्री राजजीने स्वयं प्रकट होकर ब्रह्मज्ञान-तारतम ज्ञान प्रदान किया और स्वयं श्री देवचन्द्रजीके हृदय धाममें विराजमान हुए। श्री देवचन्द्रजी महाराजने तारतम ज्ञानके द्वारा ब्रह्मात्माओंकी जागनीका कार्य किया । जो ब्रह्मात्माएँ सद्गुरुकी शरणमें आईं और उन्होंने तारतम ज्ञानको हृदयंगम किया वे मायाके प्रभावसे बच सकी । इसीलिए महामति कहते हैं,

हवे मायानो जे पामसे पार, तारतम करसे तेह विचार ।
ब्रह्माण्ड माहें तारतम सार, एणे टाल्यो सहुनो अंधकार ॥

(रास १/४१)

सद्गुरुकी शरणमें आकर तारतम ज्ञानको हृदयंगम करनेवाली आत्माएँ मायाका पार पा सकती हैं। इस ब्रह्माण्डमें तारतम ज्ञान ही सम्पूर्ण शास्त्रोंका

सार है और अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटानेमें सक्षम है ।

मायासे पार होनेके लिए अथवा मायाके प्रभावसे मुक्त होनेके लिए सद्गुरुकी शरणमें आना अतीव आवश्यक है । महामतिने अनेक चौपाइयोंके द्वारा यह बात स्पष्ट की है । वे स्वयंके लिए कहते हैं, जब तक मैंने सद्गुरुके वचनोंका पालन नहीं किया, उनकी आज्ञाको शिरोधार्य नहीं माना एवं सद्गुरुको अपने हृदयमें नहीं बैठाया तब तक माया मुझे पराजित करती रही । सद्गुरुको हृदयमें धारण कर उनके वचनोंका पालन करते ही मायाका प्रभाव शान्त होने लगा । यथा,

तमे अनेक सिखामण कही, पण भरम आडेमें कांई नव ग्रही ।
मोसूं एवी तोहज थई, जो वाणी तमारीमें नव लही ।।

तमे पेरे पेरे समझावी, मुने तोहे बुध न आवी ।
जुगतें करीने जगावी, लई तारतमें लगावी ।।

तमें अंतरगतें दीधां दृष्टान्त, त्यारे भागी मारा मननी भ्रांत ।
हवे तमें आव्या एकान्त, संसार दसा थई स्वांत ।।

(रास १/१४,१६)

जब सद्गुरुके रूपमें पधारे हुए धामधनीकी शरण प्राप्त होती है तब शत्रुओंका बल स्वतः क्षीण होने लगता है और बिगडा हुआ कार्य भी सुधर जाता है । इस प्रकार सद्गुरुकी शरण मनके मनोरथ पूर्ण कर देती है । यथा,

ज्यारे धणी धणवट करे, त्यारे बल वैरीना हरे ।
वली गयां काम सराडे चढे, मन चितव्यां कारज सरे ।।

(रास १/१७)

इस सन्दर्भमें और कहते हैं,

तमे कृपा कीधी अति घणी, जाणी मूल सगाई घर तणी ।
माया पाडी पडताले हणी, बल दीधु मुने मारे धणी ।।

हे सद्गुरु धनी ! आपने परमधामका सम्बन्ध जानकर अपार कृपा की है । आपने ही मुझे ऐसी शक्ति दी कि जिससे मैंने मायाको ठोकर लगा कर मार गिराया ।

सद्‌गुरु अपने शिष्यको अपनत्व प्रदान करते हैं । उनको आत्माकी पहचान होती है और वे आत्माके शाश्वत सम्बन्धका पालन करते हैं । निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजने महामतिको अपनी अंगना जानकर सर्वतोभावेन उनकी रक्षा की । जब जब भी महामतिको सद्‌गुरुके अन्दर श्री राजजीके दर्शन हुए हैं तब तब उन्हें मायाका प्रभाव न रहा हो ऐसा अनुभव हुआ है । जैसे ही सद्‌गुरु महामतिके हृदयधाममें विराजमान हुए तभीसे उनको व्रज रास एवं परमधामके दृश्य दृष्टिगोचर होने लगे । सद्‌गुरु तो पहलेसे ही महामतिके हृदयमें विराजमान हो गए थे किन्तु जबसे उनको इसका अनुभव होने लगा तभीसे मायाका प्रभाव दूर होने लगा इसका तात्पर्य यह है कि जब हम सद्‌गुरुकी शरणका अनुभव करने लगेंगे तभीसे मायाका प्रभाव दूर होने लगेगा । अन्यथा माया इतनी प्रबल है कि वह प्रभावित किए बिना नहीं रह सकती ।

दूसरी ओरसे देखें तो यह ज्ञात होगा कि ब्रह्मात्माएँ पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजीके चरणोंमें बैठ कर मायाका खेल देख रही हैं । श्री राजजीके चरणोंमें रहते हुए उनपर मायाका प्रभाव कैसा ? यह जिज्ञासा उत्पन्न हो सकती है । इसलिए हमें यह जानना आवश्यक है कि श्री राजजीके चरणोंमें रहते हुए भी उनकी सुरता तो मायामें लगी है । जब तक यह सुरता मायामें लगी रहेगी तब तक मायाका प्रभाव उन पर पड़ता रहेगा । जैसे ही सद्‌गुरु प्रदत्त तारतम ज्ञानके द्वारा यह ज्ञात होगा कि हम तो मूल रूपसे श्री राजजीके चरणोंमें ही हैं और हम ऐसा अनुभव भी करने लगेंगे कि हम वास्तवमें श्री राजजीके सान्निध्यमें ही हैं तभी मायाका प्रभाव दूर होगा । अन्यथा जानने मात्रसे यह प्रभाव दूर नहीं होगा । इसीलिए तारतम ज्ञानके द्वारा यह रहस्य समझाया है और हमें अपनी, अपने धनी और अपने धामकी पहचान करवायी है किन्तु अनुभव तो हमें प्रेमलक्षणा भक्तिसे ही होगा । इसलिए तारतम ज्ञानके साथ साथ प्रेमलक्षणा भक्तिकी आवश्यकता होगी । अन्यथा मायाके प्रभावसे मुक्त होनेमें लम्बा समय लगेगा । हमें अपनी सुरताको मायासे हटाकार श्री राजजीके चरणोंमें लगाना है,

इन उलटीसे उलटाए के पिया प्रेमें करूं सनमुख ।

किन्तु यह कार्य मात्र ज्ञानसे नहीं अपितु प्रेमसे सम्भव नहीं होगा। क्योंकि ज्ञानमें अहंभावके लिए पूर्णसम्भावना रहती है। हम ज्ञानसे दुनियामें बड़े बनना चाहते हैं जबकि प्रेम समर्पण सिखाता है। प्रेममें हम स्वयंको मिटा देते हैं। इसीलिए कहा है,

पंथ होवे कोटि कलप, प्रेम पहुंचावे मिने पलक ।

प्रेमके अतिरिक्त अन्य सभी साधनायें परमात्मा पर्यन्त पहुँचानेमें लम्बा समय लगाती हैं। और मार्गमें भी अनेक विघ्नवाधायें आनेसे पहुँचना निश्चित नहीं होता हैं। ऐसेमें प्रेमका मार्ग अति उत्तम होता है और वह पलमात्रमें पहुँचा देता है। प्रेम मार्गकी दूसरी विशेषता यह है कि उसमें किसी प्रकारकी रुकावट नहीं रहती है। वह सारे द्वारोंको खोल देता है,

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारके पार पियाके पार ॥

प्रेम मार्गकी तीसरी विशेषता यह है कि यह अन्तर्यात्रा है। इसके लिए बाह्य यात्राकी कोई आवश्यकता नहीं रहती है। यह तो प्रेमीको वहीं बैंठे बैंठे उसी शरीरमें रहते हुए भी पारका अनुभव करवा देता है। मायामें रहते हुए भी श्री राजजीके सान्निध्यका अनुभव करवा देता है। यथा,

प्रेम ऐसी भांत सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे ॥

और भी, **इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरण मनोरथ हुए सब काम ॥**

इस प्रकार प्रेममार्गकी अनेक विशेषतायें हैं। यहाँ पर मात्र संकेत ही किया है। शास्त्रोंने इस मार्गको गुप्त रखा था। ब्रह्मात्माओंके आगमनसे यह प्रकट हुआ है। यथार्थमें ब्रह्मात्माएँ ही प्रेमके साथ प्रकट हुई हैं। उनके आगमन पूर्व संसारमें प्रेमका नाम ही था। उसका स्वरूप तो ब्रह्मात्माओंने ही प्रकट किया है। नारदजीने भी प्रेमके लिए यथा व्रज गोपिकानामके द्वारा गोपियोंका उदाहरण देकर इस बातकी पुष्टि की है।

सामान्यजन शरीर या संसारके प्रति होनेवाले आकर्षणको प्रेम समझते हैं। यह प्रेम नहीं अपितु मोह है। इसमें पड़ने पर मनुष्यका पतन होता है। जबकि प्रेम परमात्माके प्रति होनेवाला आकर्षण है। वह आत्माका धर्म है। ऐसे प्रेममें डूबनेवाला व्यक्ति भी भव सागरसे पार हो जाता है। उसका पतन कभी भी सम्भव नहीं है। उसका तो सदैव उत्थान ही है। वह तो यहाँ बैठे बैठे

पार पहुँच जाता है। ऐसा प्रेम मूलतः ब्रह्मात्माओंमें ही है। उनके सम्पर्कमें आनेवाले अन्य जीव भी इसका आस्वादन कर पाते हैं। इसके लिए अन्तःकरणकी शुद्धता अर्थात् हृदयकी निर्मलता परम आवश्यक है। प्रेममें कभी भी प्रदर्शन (दिखावा) नहीं होता है। प्रेममें क्षणमें हसना क्षणमें रोना या पागल पन होना भी भूषण है दूषण नहीं। प्रेमके दिखावा करना दूषण कहलाता है। यह दुनियाँ दिखावेकी है। इसलिए इसमें लगोंको दिखावा अच्छा लगता है और समझते भी उसीको हैं। इसमें प्रेमको समझने वाला विरला ही होता है। इसलिए सामान्य जन दिखावेको प्रेम समझते हैं और प्रेमको दिखावा समझते हैं। इसका कारण यह है कि जिसके हृदयमें प्रेम ही प्रकट नहीं हुआ है वह दूसरेके प्रेमको कैसे समझ पाएगा ? जिसके हृदयमें छल, कपट, राग, द्वेष आदि भरे हुए हैं ऐसे लोग इन्हीं भावोंको समझ पाते हैं। वे प्रेमको समझ नहीं पायेंगे। इसलिए उनको तो प्रेमी पागल लगने लगेगा और वे उसकी मजाक करने लगेंगे। प्रेमी तो हृदयसे पागल होगा और वह भी परमात्माके प्रेममें, जबकि दुनियाँका पागल बुद्धिसे पागल होगा और दुनियाँके पीछे पागल होगा। दुनियाँकी चतुराईसे तो परमात्माके प्रेममें पागल होना ही श्रेष्ठ है। संसारके चतुर व्यक्तियोंसे तो परमात्माके प्रेममें पागल व्यक्ति करोड़ों गुना श्रेष्ठ होता है। किन्तु यह पागलपन मायाके विकारोंसे मुक्त होने पर ही प्रकट होता है। इसलिए इन विकारोंसे मुक्त होना अति आवश्यक है। अध्यात्म क्षेत्रकी सभी साधनायें विकारोंसे मुक्त होनेके लिए हैं। परमात्माको पानेके लिए तो मात्र प्रेम ही एक साधन है। किन्तु विकारोंके होते हुए परमात्माकी प्राप्ति नहीं होती है इसलिए विकारोंको दूर करनेवाली साधनाओंको भी परमात्माकी प्राप्तिके लिए कहा जाता है। यथार्थतः परमात्मा प्रेमसे ही प्राप्त होतें है। इस रहस्यको समझनेके लिए भी ज्ञानकी आवश्यकता होती है अन्यथा साधक भ्रान्तिमें पड़कर पथभ्रष्ट हो जाएगा। इसीलिए महामति श्री प्राणनाथजीने तारतम्य ज्ञान एवं प्रेमलक्षणा भक्तिका एकसाथ उपदेश दिया है। क्योंकि ज्ञानसे जाना जाता है और प्रेमसे पाया जाता है।

मायाके प्रवाहमें बह कर मोहको ही प्रेमका वाघा पहनाने वाले प्रेमके नाम पर भ्रान्तियाँ फैलाते हैं और कहते हैं कि यह माया भी तो मूलतः श्री

राजजीसे ही प्रकट हुई है, इसलिए इसका पार पाना सम्भव नहीं है। ऐसे व्यक्ति स्वयं भी मोहपासमें बंधे हुए होते हैं और दूसरोंको भी इसीमें जकड़े रखना चाहते हैं। अपनी कमीको छिपानेका यह बहुत बड़ा बाहना है। वास्तवमें हम अपने कर्मोंके कारण माया मोहके पाशमें बँधे हुए होते हैं। यद्यपि यह माया श्री राजजीसे ही उत्पन्न हुई है किन्तु श्री राजजीने इसको देखनेके लिए कहा है, भोगनेके लिए नहीं। हम इसके लुभावने आकर्षणोंकी ओर खींचे जाते हैं जिससे यह हमें अपने पाशोंमें जकड़ लेती है। यह अपने हथियारोंसे सज कर बैठी है। इसका काम ही यही है। महामतिने मायाके हथियार गिनाए हैं,

एहना आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल ।
अगिन कुटिल ने कोमल, चंचल चतुर चपल ।।

अर्थात् अमृत (भौतिक वस्तुओंका प्रलोभन), रूप (सौन्दर्य), रस (मधुर वाणी), छल, बल (शक्ति), वल (दाउ पेच), बुद्धि चातुर्य अग्नि (काम क्रोधरूपी आग), कुटिलता (कटप), कोमलता (विनम्रता), चंचलता, चतुरता और चपलता ये तेरह हथियार मायाके हैं। यह शाम, दाम, दण्ड भेद जैसे सभी उपायोंसे अपने वशमे करनेके लिए सदैव तैयार रहती है। इसलिए जो आत्माएँ अपने धनीको भूलकर मायाकी ओर देखती हैं उनको यह शीघ्र ही अपने पाशमें जकड़ लेती हैं किन्तु जो आत्माएँ अपने धनीसे प्रेम करती हुई, उनके सान्निध्यका अनुभव करती हुई मायाको देखती हैं उनको यह प्रभावित नहीं कर पाती है। जो आत्माएँ मायाकी ओर आकृष्ट हो जाती हैं, उनकी भावना एवं कर्म दोनों ही दूषित हो जाते हैं जिससे वे बन्धनमें फँस जाते हैं। इसलिए हमें अच्छे कर्म करते हुए निरन्तर श्री राजश्यामाजीका स्मरण करना चाहिए। अन्यथा एक दुष्कर्म अनेकों बुराइयोंको निमन्त्रण देता है और हम लापरवाही करते हुए उनमें फँसते जायेंगे।

जीवनमें सद्‌गुरुका मार्गदर्शन और श्री राजजीकी भक्ति प्राप्त होगी और हम सच्चे दिलसे श्री राजजीसे प्रेम करेंगे तो हमारा जीवन सफल होगा और हम मायाके बन्धनोंमें फँसे बिना निरन्तर आनन्दका अनुभव कर पायेंगे। अस्तु।

महमति श्री प्राणनाथजीका प्रदान

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज

सृष्टिके आदि कालसे लेकर आज पर्यन्त इस जगतमें अनेक महापुरुषोंका अवतरण हुआ है । उन्होंने उनके समक्ष उपस्थित लोगोंके जीवनको उन्नत बनानेके लिए विभिन्न प्रकारकी शिक्षायें दी है । इसीके आधार पर आज अनेक शास्त्र उपलब्ध हैं । ऐसे महापुरुषोंमें महामति श्री प्राणनाथजीका स्थान अन्यतम है । जिन्होंने विश्व मानवको लोकोत्तर ज्ञान प्रदान कर शाश्वत मुक्तिका मार्ग दिखाया । महामति श्री प्राणनाथजीको यह ज्ञान अपने सद्‌गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजसे प्राप्त हुआ था । जिन्होंने अपने जीवनको साधनामय बनाकर बाल्यकालसे ही परमात्माकी खोज की और चालीस वर्षकी आयुमें पूर्णब्रह्म परमात्माके साक्षात् दर्शन प्राप्त किये । और उनसे पातालसे लेकर परमधाम पर्यन्तका ज्ञान प्राप्त किया । पूर्णब्रह्म परमात्माने ब्रह्मआत्माओंको जागृत करनेका दायित्व सौंपते हुए उनको तारतम्य ज्ञान एवं तारतम मंत्र प्रदान किया और इसे विश्व व्यापी बनानेका आदेश दिया । तदनुसार निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजने नवतनपुरी धामकी स्थापना कर तारतम ज्ञानके प्रचार-प्रसारको आगे बढ़ाया । उनके मनमें हार्दिक अभिलाषा थी कि पूर्णब्रह्म परमात्मा प्रदत्त तारतम्य ज्ञानको विश्वव्यापी बनानेके लिए कोई सक्षम एवं योग्य व्यक्ति प्राप्त हो । जैसे ही महामति श्री प्राणनाथजी उनके चरणोंमें आकर प्रणाम करते हैं उनको देखकर श्री देवचन्द्रजी महाराजको विश्वास हुआ कि मैं जिस व्यक्तिकी प्रतीक्षा कर रहा था वह यही है । यद्यपि महामति प्राणनाथजीकी आयु उस समय मात्र बारह वर्षकी थी किन्तु तीक्ष्ण प्रतिभा एवं सद्‌गुरुके आशीर्वादसे उनके अन्दरके गुण तीव्र गतिसे विकसित होकर प्रकट होने लगे । निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजने धर्मका सम्पूर्ण दायित्त्व इनको सौंपा और देहत्याग कर स्वयं भी उनके हृदयमें विराजमान हुए ।

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजके धामगमनके पश्चात् महामति श्री प्राणनाथजीने धर्मका दायित्त्व संभालते हुए देश विदेशमें विचरण कर तारतम्य ज्ञानका प्रचार प्रसार किया । तारतम ज्ञान आत्म ज्ञान भी है और ब्रह्मज्ञान भी है। उन्होंने इस ज्ञानके द्वारा आत्म पहिचानसे लेकर व्रज, रास, जागनी एवं परमधामका पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया ।

इस आलेखके माध्यमसे उनके अनेक प्रदानोंमेंसे कुछका संक्षिप्त विवरण यहाँ पर दिया जा रहा है वे इस प्रकार हैं,

१. परमधामका विवरण

२. व्रज रास और जागनी लीलाकी अखण्डताका स्पष्टीकरण

३. विश्व जागनी

परमधाम : पूर्णब्रह्म परमात्माका धाम परमधाम कहलाता है । अनेक लोगोंको पूर्णब्रह्मकी पहिचान न होनेसे उन्होंने सामान्य देवी देवतायें, विभिन्न अवतार तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं भगवान नारायणको ही पूर्णब्रह्म मानकर उनके स्थानको परमधाम माना । किन्तु शास्त्रोंका विशद् अध्ययन एवं अनुशीलनसे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि पूर्णब्रह्म परमात्मा क्षर जगतके देवी देवतायें, अवतार, ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा भगवान नारायणसे परे हैं । हम जिस ब्रह्माण्डमें हैं उसमें चौदह लोक माने गये हैं । उनमेंसे मध्यभागमें स्थित मृत्युलोकमें हम हैं। इससे निम्नकोटिके पाताल लोक माने गये हैं उनकी संख्या सात है। वे क्रमशः इस प्रकार हैं,

अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल और पाताल । इस प्रकार ब्रह्मांडके निम्नभागसे गिना जाये तो सात पातालोंके ऊपर आठवां लोक मृत्युलोक कहलाता है। इससे ऊपरके उच्चकोटिके अन्य छ लोक हैं। वे क्रमशः इस प्रकार हैं,

भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक एवं सत्यलोक। इन चौदह लोकोंको भगवान नारायणका स्थूल शरीर माना गया है। भगवान इस ब्रह्माण्डके अधिपति हैं। वे चौदह लोकोंसे आगे अष्टावरण,

ज्योतिस्वरूप, गायत्री, शून्यनिराकार एवं इससे आगे महाशून्यमें विराजमान हैं। इनको शास्त्रोंमें अव्यक्त भी कहा गया है। वे ब्रह्मा, वष्णु महेशके रूपमें व्यक्त होकर चौदह लोकोंमें सृष्टि, स्थिति और लयका कार्य करते हैं। सतलोक चौदह लोकोंकी राजधानी है। वहाँपर ब्रह्माजीके लिए ब्रह्मापुरी, भगवान विष्णुके लिए वैकुण्ठ धाम एवं भगवान शंकरके लिए कैलाशपुरी हैं। ये तीनों देवतायें अपने अपने स्थानमें रहकर सृष्टि स्थिति एवं लयका कार्य करते हैं। संपूर्ण चौदह लोकोंका दायित्त्व इनको प्राप्त है। इनके सहयोगके लिए तैंतीस प्रकार (तैंतीस कोटि) के देवी देवतायें हैं जो स्वर्गलोकमें रहतें हैं। स्वर्गलोक, भुवर्लोक एवं मृत्युलोकोंका दायित्त्व इनके ऊपर है।

इन देवी देवताओंके उपासकोंको ये लोग इन तीनों लोकोंमेंसे वाञ्छित सुख प्रदान कर सकते हैं जबकि ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश अपने उपासकोंको चौदह लेकोंका वाञ्छित सुख प्रदान कर सकते हैं। वैकुण्ठ धाम अस्थायी मुक्तिका स्थल है। यह ब्रह्माण्डका संक्षिप्त विवरण है। यह ब्रह्माण्ड परिवर्तनशील होनेसे इसे क्षर ब्रह्माण्ड कहते हैं। और इसके अधिपति भगवान नारायणको क्षर पुरुष कहा जाता है। ऐसे अनन्त ब्रह्माण्डको नेत्रभ्रमण मात्रमें बनाने और मिटाने वाले पुरुषको अक्षर पुरुष (अक्षर ब्रह्म) कहा जाता है।

अक्षरब्रह्मको चतुष्पाद विभूति कहा जाता है। उनके चार पादको भी पृथक्–पृथक् रूपसे ब्रह्मकी संज्ञा दी है वे इस प्रकार हैं,

१. अव्याकृत ब्रह्म

२. सबलिक ब्रह्म

३. केवल ब्रह्म

४. सत्स्वरूप ब्रह्म

यथार्थतः ये अक्षरब्रह्मके विभिन्न विभाग हैं। इन्हीं विभागोंके अन्तर्गत प्रणव ब्रह्म एवं गोलोकीनाथका भी स्थान आता है। इन चारों विभागोंको अक्षर ब्रह्मके चार अन्तःकरण भी माना गया है। प्रणव ब्रह्मके द्वारा चेतनायें

प्रकट होती हैं और विभिन्न ब्रह्मांडोंमें आवश्यकतानुसार भेजी जाती हैं। विभिन्न ब्रह्माण्डोंमें ब्रह्मा, विष्णु एवं महेशको आवश्यकतानुसार प्रशासनिक सहयोगके लिए गोलोक धाम है। ब्रह्माण्डमें भेजे गये जीवोंके अखण्ड मुक्तिका स्थान भी अक्षर ब्रह्मके चार विभागोमें है। ब्रह्मात्माओंके सम्पर्कमें आनेवाले ये जीव इन चारों अन्तस्करणमें अपनी योग्यताके अनुसार अखण्ड मुक्ति प्राप्त करते हैं। अक्षर ब्रह्मको कार्य ब्रह्म भी कहा गया है। यहाँपर उनके कार्योंका नामोल्लेख मात्र किया गया है। ऐसे अक्षर ब्रह्म भी जिनकी आज्ञासे अनन्त ब्रह्माण्डोंका सर्जन और विसर्जन करते हैं उनको अक्षरातीत पुरुष अथवा अक्षरातीत ब्रह्म कहा गया है। वे ही पूर्णब्रह्म हैं और उनका धाम परमधाम है। शास्त्रोंमें पूर्णब्रह्म परमात्मा और परमधामके विषयमें भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न ढंगसे उल्लेख किया है। वह इन्हीं पूर्णब्रह्म परमात्मा और इसी परमधामके लिए है। किन्तु शास्त्रोंकी शैली एवं गूढार्थसे अपरिचत लोग शास्त्रोंके इन उल्लेखोंका तारतम्य नहीं बैठा पाते हैं। इसके कारण पूर्णब्रह्म और परमधामके विषयमें बहुत बड़ी भ्रान्ति फैली हुई है। इसीके निर्मूलनके लिए स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर तारतम्य ज्ञान प्रदान किया है। इसके विषयमें शास्त्रोंमें कहा गया है,

तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्दलक्षणम् ।

अर्थात् तारतम्य ज्ञानसे ही परमात्माके सच्चिदानन्द स्वरूपको यथार्थ रूपमें जाना जा सकता है। महामति श्री प्राणनाथजीने इसी तारतम्य ज्ञानसे पूर्णब्रह्म परमात्मात और परमधामका विशद् विवरण श्री तारतम सागर ग्रन्थके द्वारा प्रस्तुत किया है। और शास्त्रोंके गूढ़ रहस्योंका तारतम्य भी प्रस्तुत किया है। उपनिषदोंके अनुसार परमधामका विवरण इस प्रकार है,

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

यह ब्रह्मधाम–परमधाम सभी प्रकारसे परिपूर्ण है। इस धामके अधिपति परमब्रह्म परमात्मा भी हर प्रकारसे पूर्ण हैं। वहाँकी सारी लीलायें भी परिपूर्ण हैं। हर प्रकारसे परिपूर्ण होनेसे अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माको पूर्णब्रह्म कहा गया है। परब्रह्म परमात्मा एवं परमधाम स्वयं प्रकाश हैं।

इसलिए परमात्मा एवं परमधामको प्रकाश स्वरूप भी कहा गया है। इसके विषयमें उपनिषदमें कहा है,

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

(मुन्डकोपनिषद २/२)

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावन । गीता

यह ब्रह्मधाम–परमधाम सूर्य, चन्द्र एवं ताराओंसे प्रकाशित नहीं अपितु स्वयमेव प्रकाशित है। यहाँपर लीलाके अनुरूप ऋतु परिवर्तन हुआ करती है न कि ऋतुके अनुरूप लीला । महामति श्री प्राणनाथजी इस विषयमें कहते हैं,

ऋतुसे लीला न लगी, लीला से ऋतु जान ।
जब जौसी लीला जहां, तैसी ऋतु परमान ॥

जिनका कोई आश्रय नहीं है जो अपनी सत्ता मात्रसे सर्वमें व्याप्त हैं ऐसे पूर्णब्रह्मके ब्रह्मधाममें कोई पदार्थोंकी सापेक्ष नहीं है अपितु अपने ही प्रकाशसे परिपूर्ण है । वहाँ अन्य प्रकाश पदार्थकी आवश्यकता नहीं है । क्योंकि वे अपने स्वरूपसे परिपूर्ण हैं। ऐसे सच्चिदानन्द परब्रह्म परमात्मा, उनका धाम एवं लीलाको समझनेके लिए तारतम्य ज्ञान ही एक मात्र साधन है । इस ज्ञानके अतिरिक्त कोई भी इस परम तत्त्वको जान नहीं पाता । इसीलिए तो महामति श्री प्राणनाथजीने कहा है,

तारतमको बल कोई न जाने, एक जाने मूल स्वरूप ।
मूलस्वरूपकी चित्तकी बातें, तारतममें कई रूप ॥

साक्षात् पूर्णब्रह्म परमात्मा प्रदत्त इस ज्ञानमें ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा जन्म जन्मान्तरसे हृदयगुहामें व्याप्त अज्ञानान्धकाररूपी भ्रम एवं भ्रान्तियाँ पल भरमें विनष्ट होकर हृदय प्रकाशमय बन जाता है ।

इस दिव्य परमधाममें कुछ भी जड़ नहीं है। वहाँकी सारी वस्तुयें एवं सामाग्रियाँ चेतनमय, ज्ञानमय, प्रेममय एवं रसमय हैं। वस्तुतः इस

संसारमें चेतनशील कही जाने वाली वस्तुयें भी जड़वत् हैं। क्योंकि यहाँकी सभी वस्तुयें नाशवान हैं। किन्तु परमधाममें ऐसा नहीं है। वहाँकी जड़ कही जाने वाली वस्तुयें भी यथार्थमें चेतनमय ही हैं। महामति श्री प्राणनाथजी इसके विषयमें कहते हैं,

ये चेतन कहावे झूठी जिमी, सो सब जड़ तूं जान ।
जो थिर कहावे अरसमें, सो चेतन सदा परमान ॥

सिनगार

कहे हार हम हैडे पर, अति विराजे अंग लाग ।
सुख देत हक स्वरूपको, ये कौन हमारो भाग ॥

यों वस्तर भूषण अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब ।
कहे सबका देऊं पड़उत्तर, ये नहीं रूप मिने ख्वाब ॥

सागर

पूर्णब्रह्म परमात्मा श्रीराजजीके अंगमें सुशोभित वस्त्र एवं आभूषण भी स्वयंको श्रीराजजीसे विभूषित मानते हैं। और श्री राजजीके अंगमें होनेका सौभाग्य प्राप्त होनेपर स्वयंको धन्य मानते हैं। वे श्री राजजीके साथ प्रेमपूर्ण वार्तालाप भी करते हैं। यह सब परमधाममें ही सम्भव है। क्योंकि परमधाम चैतन्यकी राजधानी है, वहाँके यावत् पदार्थ चेतन हैं। इसीलिए वे वार्तालाप कर सकते हैं। संसार जड़वत् होनेसे लौकिक बुद्धिके द्वारा इस रहस्यको समझना कठिन होता है। श्री राजजी स्वयं सच्चिदानन्द हैं। इसीलिए उनके अंगोंमें सुशोभित वस्त्राभूषण भी सच्चिदानन्दमय हैं। तभी इस प्रकार वस्त्राभूषणोंके साथ उनका वार्तालाप सम्भव है।

पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्द हैं इस विषयमें ब्रह्मवैवर्तपुराणमें इस प्रकारसे कहा है,

चिदादित्यं किशोराङ्गं परे धाम्नि विराजितम् ।
स्वरूपं सच्चिदानन्दं निर्विकारं सनातनम् ॥

पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्द हैं। वे युवा हैं, निर्विकार और

सनातन हैं । उनके अंग–प्रत्यङ्गोंकी शाश्वतताके विषयमें महावराहपुराणमें कहा गया है,

सर्वे नित्याः शाश्वताश्च देहास्तस्य परात्मनः ।
हानोपादानरहिताः नैव प्रकृतिजाः क्वचित् ॥

परमात्माके संपूर्ण अंग हस्त, पाद, मुख, नेत्र नासिकादि शाश्वत्, अनादि, नित्य एवं चेतनमय हैं। इसीलिए उत्पत्ति एवं ह्रास रहित हैं। वे स्वयं विश्व ब्रह्माण्डके रचयिता अक्षरब्रह्मके भी स्वामी हैं। इसलिए अक्षरातीत हैं।

परमधाममें महल मन्दिर, वनोपवनका कोई पारावार ही नहीं है । ऐसे दिव्य परमधामके मध्यभागमें पूर्णब्रह्म परमात्माका विशाल मन्दिर है उसको मूलमन्दिर, रंगमहल, रंगभवन, निजवेश्म, पुण्डरिकवेश्म आदि नामोंसे पुकारा गया है । यह मूल मन्दिर दशभूमिकायुक्त है । इसके विषयमें माहेश्वरतन्त्रमें इस प्रकार कहा है,

मूलमन्दिरमेतत्तु ह्यद्भुतं सुरसुन्दरि ।
नवभूम्यात्मकं यत्तु दशमी चित्रशालिका ॥

मूलभूमिस्तु प्रथमा द्वितीया मतिविभ्रमा ।
तृतीया भोगरूपा च नृत्यभूमिश्चतुर्थिका ॥

पञ्चमी शयनाख्या च षष्ठी वैमानिकीति च ।
सप्तमी ह्यष्टमी चोभे दोलाभूमी निरूपिते ॥

नवमी दूरलक्षा च दशमी चन्द्रभूमिका ।
इत्येता दश चाख्याताः भूमयो निजवेश्मनः ॥

इस प्रकार माहेश्वरतन्त्रमें भगवान शंकरने पार्वतीजीको परमधामका संक्षिप्त विवरण समझाया है। इसका विशद् वर्णन महामति श्री प्राणनाथजीने किया है। यहाँ पर उसका उल्लेखमात्र करते हैं।

दिव्य ब्रह्मपुरधाम परमधाममें पूर्णब्रह्म परमात्माका मूल मन्दिर दश भूमिकायुक्त है । उसकी प्रथम भूमिका सभी भूमिकाओंके आधारके रूपमें होनेसे **आधारभूमि अथवा मूलभूमि** कहलाती है। वहाँपर पूर्णब्रह्म परमात्मा

अपनी आत्माओंके साथ विभिन्न प्रकारकी लीलायें करते हैं। दूसरी भूमिका मतिविभ्रमा कहलाती है उसमें दर्पणके मन्दिर हैं। उनमें प्रवेश करते ही आत्माओंको अनन्त प्रतिविम्ब दिखाई देते हैं इसीलिए इसे **मतिविभ्रमा अथवा भूलभूलवनी** कहा है। तृतीय भूमिकामें भोजन लीला होती है। इसीलिए इसे **भोगभूमि** भी कहा है। यहाँपर प्रातःकालकी विभिन्न लीलायें होती हैं। पूर्णब्रह्म परमात्मा यहींसे अक्षर ब्रह्मको दर्शन देते हैं। विभिन्न प्रकारके पशुपक्षी भी यहींसे दर्शन प्राप्त करते हैं। चतुर्थ भूमिकामें नृत्यशालाकी विशेषता है इसीलिए इसे **नृत्यभूमि** भी कहा है। **पंचमी भूमिकामें शयनलीला होती है।** अतः इसको **शयन भूमि** कहा गया है। छठ्ठी भूमिकामें विभिन्न प्रकारके विमानोंके लिए विशेष व्यवस्था है। इसीलिए इसे **विमान भूमि** कहते हैं। सप्तमी एवं अष्टमी भूमिकामें भिन्न भिन्न प्रकारके झूले (हिन्डोले-दोले) लगे हुए होनेसे इनको **दोला भूमि** कहते हैं। नवमी भूमिकासे परमधामके पच्चीस पक्षोंके विभिन्न दृश्योंका अवलोकन होनेसे इसे **दूरलक्षा** कहते हैं। दसमी भूमिका **चाँदनी** है। इसीलिए इसे **चन्द्रभूमि** कहा है। इसमें वनोपवनके साथ-साथ लीला विहारकी विभिन्न सामग्रियाँ हैं।

यह तो मूल मन्दिरका भी नामोल्लेख मात्र है। परमधाममें महल, मन्दिर, वन, उपवन, नदी, सागर, नहरें, पहाड-पर्वतादिका कोई पारावार ही नहीं है। शास्त्रोंमें जिसके लिए संकेत मात्र है ऐसे परमधामका विशद् वर्णन कर महामति श्री प्राणनाथजीने हमारे ऊपर बड़ी कृपा की है।

व्रज, रास और जागनी लीलाकी अखण्डताका स्पष्टीकरण : व्रज और रासलीलाकी अखण्डताके विषयमें अनेक मनीषियोंने प्रकाश डाला है। तथापि यह रहस्य स्पष्ट नहीं हुआ था। महामति श्री प्राणनाथजीने इसे स्पष्ट किया है। उसको अति संक्षेपमें इस प्रकार समझा जा सकता है,

पूर्णब्रह्म परमात्मा परमधाममें नित्य लीलाविहार करते हैं। उन्होंने नश्वर जगतमें आकर भी विभिन्न लीलायें की हैं। उनको ही व्रज, रास और जागनी लीला कहा जाता है। व्रज और रासकी लीला स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माकी लीला होनेसे अवतार लीलासे विशिष्ट है। क्योंकि उस समय श्री कृष्ण पूर्णब्रह्म परमात्माके रूपमें विराजमान थे। रास लीलाके पश्चात्

सात दिनकी गोकुल लीला और चार दिनकी मथुरा लीला गोलोक धामकी लीला मानी गई है। गोलोकीनाथ श्री कृष्णजीके आगमनका मुख्य उद्देश्य कंसोद्धार एवं पृथ्वीका भार हरण था। इसके लिए ही उन्होंने ब्रह्मा, विष्णु तथा महेशको वचन दिये थे। तदनन्तर श्री कृष्णजीकी मथुरासे लेकर द्वारका पर्यन्तकी लीला भगवान विष्णुकी अवतार लीला है। इसी प्रकार कलियुगमें भी स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर श्री देवचन्द्रजी महाराजको दर्शन दिये और उनके हृदयमें विराजमान होकर अनेक लीलायें की। तदनन्तर श्री देवचन्द्रजी महाराजने देह त्यागकर पूर्णब्रह्म परमात्मा सहित स्वयं महामति श्री प्राणनाथजीके हृदयमें विराजमान होकर अनेक लीलायें की। इन लीलाओंको जागनी लीला कहा है। इसप्रकार व्रज, रास और जागनी लीला स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर की है। जिनको अक्षर ब्रह्मने अपने हृदयमें अंकित कर अखण्ड किया। अनेक महापुरुषोंने व्रज और रासकी लीलाओंको अखण्ड लीला कहा है किन्तु यह किस प्रकार अखण्ड हुई है इस रहस्यको कोई स्पष्ट नहीं कर पाया। महामति श्री प्राणनाथजीने ही इसकी स्पष्टता की है। यह उनकी बहुत बड़ी देन है।

विश्व जागनी : विश्व जागनी अथवा समूह जागनी महामतिकी बहुत बड़ी देन है। तारतम ज्ञान प्राप्त कर इस पर मनन करते हुए तदनुसार आचरण करने पर अनेक आत्मायें एक साथ जागृत हो सकती हैं। महामतिने **सुख शीतल करूं संसार, ब्रह्मसृष्टि और दुनिया देऊं जगाय, पसरसी चौदे भुवन, ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्टिको तो मैं अंगना नार, क्या देखी हम दुनिया जो इनको न करें अखण्ड** आदि वचनोंके द्वारा विश्व जागनीका सूत्रपात ही नहीं अपितु शंखनाद किया है। इसका विस्तृत वर्णन पृथक रूपसे किया जा सकता है यहाँ पर तो मात्र संकेत ही किया है॥ अस्तु॥

साहित्य सेवा

सिलीगुड़ी निवासी श्री चन्द्रप्रकाश तथा मीना शर्माके सुपुत्र संदीप शर्माके शुभ विवाहके उपलक्ष्यमें श्री ५ नवतनपुरी धाममें थाल भोग अर्पण कर पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु.१०१/ भेट प्रदान किया हैं। श्री राजजी महाराज उनके दाम्पत्य जीवनमें सुख शान्ति प्रदान करें ऐसी प्रार्थना.

सोई जनम तुम्हारो

शास्त्री लक्ष्मण चैतन्य-श्री ५ नवतनपुरी धाम

प्रिय सुज्ञजन, सेवापूजाकी यह चौपाई है,

कृष्ण कृष्ण मुख रटहूँ रातदिन, श्वासहि श्वास पुकारो ।
जिस देही प्रभु पूरन मिलि है, सोई जन्म तुम्हारो ॥

अर्थात् जिस देहमें सच्चिदानन्दघन, सकलनियन्ता, सर्वैश्वर्यसम्पन्न परमब्रह्म परमात्माका पूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा उसीको ही महापुरुषोंने यथार्थ जन्म कहा है । अतः हमें प्रतिपल उन्हीं परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्री कृष्णका दिव्यातिदिव्य पावन नामस्मरण करते रहना चाहिए ।

ऐसे तो हम अपने आपको जन्मे हुए मानते हैं । कोई हमें पूछे कि आपका जन्म कब हुआ ? हम शीघ्रातिशीघ्र जवाब दे देते हैं कि मेरा जन्म अमुक वर्ष, महीना व दिनमें हुआ । मैं अभी अमुक वर्षका हो गया । परन्तु आध्यात्मिक शिखरको स्पर्श करनेवाले महापुरुष इस जन्मको जन्म नहीं मानते । वास्तवमें अध्यात्म विज्ञान देहसे ज्यादा आत्माको प्राधान्य देता है । हाँ, यह वास्तविक है कि **मनुष्य तन दुर्लभ है साधो, सो क्यों भूलि गुजारो ॥** यह देवदुर्लभ मनुष्य देह अति महत्त्वपूर्ण है, किन्तु देह ही सबकुछ है यह बात नहीं है । यह देह अवश्यमेव बहुत कुछ है परन्तु सब कुछ कदापि नहीं है । क्योंकि मनुष्यके रूपमें जन्म होने पर भी सभीको मनुष्यत्व प्राप्त हो जायेगा यह निश्चित नहीं है । संसारमें बहुत कम लोग होते हैं जो वास्तविक रूपमें मनुष्यत्व प्राप्त कर पाते हैं । वस्तुतः मनुष्यको जब आत्मज्ञान एवं परमात्मारूपी परमधन प्राप्त होता है तभी उसको शास्त्र और सद्गुरुने यथार्थ जन्म माना है । लोक व्यवहारमें भी हम कभी-कभी किसीके प्रति कहते और सुनते हैं न अरे ! **तुम मनुष्य बनो,** इसका तात्पर्य है कि संसारमें अधिकतर लोग शरीरसे ही मनुष्य होते हैं किन्तु ज्ञानाभाव, एवं विवेकाभावमें वे पूर्णतः मनुष्य नहीं बन पाते हैं । इसका अर्थ हुआ कि जब हमारे हृदयागारमें ज्ञानकी ज्योति प्रकट हो जाएगी, हम सद्गुण एवं सद्विचारोंसे परिपूरित बन

जायेंगे, परम तत्त्वके रहस्यात्मक ज्ञानका उदय जब हमारे मानस पटल पर हो जाएगा तभी हमारा पूर्णतः जन्म होगा। इस विषयमें एक सुन्दर दृष्टान्त है,

एक बार कोई सन्त धर्माटन करते हुए किसी एक नगरमें पहुँच गये। वहाँपर उन्होंने सत्संगका शुभारंभ कर दिया। नगरमें बात फैल गई कि बड़े अच्छे सन्त आये हुए हैं, सत्संग द्वारा लोगोंको परम ज्ञान प्रदान करते हैं। सत्संगमें लोगोंकी भीड़ लगने लगी। एक दिनकी बात है सन्त महोदय सत्संग कर रहे थे एक नवयुवती सबसे आगे सन्तके समक्ष बैठकर बड़े भाव एवं प्रेमसे सत्संग श्रवण कर रही थी। सत्संगके विराम होनेके पश्चात् सन्तने उसको पूछा,

सन्त : बेटी–तुम्हारा नाम क्या है ? और कहाँसे आयी हो ?

नवयुवती : भगवन् यही जाननेके लिए तो मैं आपके पास आयी हूँ,

सन्त बड़े प्रसन्न हुए जबाब सुनकर। आगे प्रश्न किया,

सन्तः अच्छा ये बताओ अभी तुम्हारी ऊमर क्या है ?

नवयुवती : अभी मैं १२ सालकी हूँ।

यह सुनकर सन्त बड़े चक्करमें पड़ गए। अरे ! यह क्या है देखनेमें तो यह २२ सालकी लग रही है और विवाहिता भी है

कह रही है १२ सालकी। फिर पूछा,

सन्तः तुम्हारे पतिदेवकी क्या उमर है ?

नवयुवती : अभी ७ सालके हैं।

सन्त : तुम्हारी सासजी कितने सालकी हैं ?

नवयुवती : अभी १० दिन पहले ही उनका जन्म हुआ है।

सन्त : और तुम्हारे ससूरजी ?

नवयुवती : भगवन्, क्या कहूँ इसी बातकी तो दुःख है वह अभी जन्म ले नहीं पाये हैं। इसीलिए मैं आपके चरणमें आयी हूँ। उनको भी आप जन्म दीजिए।

सन्तः और नवयुवतीका वार्तालाप समीप वैठे श्रोताजन भी बड़े ध्यानसे श्रवण कर रहे थे। सन्त तो परमज्ञानी थे ही बात समझ गये किन्तु

श्रोता इस गूढ़ रहस्यात्मक बातको समझ नहीं पाये । सभीने सन्तसे प्रार्थना की । भगवन्, यह क्या बात है हमें भी समझाइये । हम सभी इनकी बात सुनकर भ्रमित हो गए । सन्तने कहा जिज्ञासुओ ! यह परम रहस्यमयी बात है । आप सभीको समझना नितान्त आवश्यक है । देखो, जब तक हमें परम कृपालु सन्त सद्‌गुरुके द्वारा परमात्माका नाम, धाम, स्वरूप एवं लीलादिका परम ज्ञान प्राप्त नहीं होता है तब तक हम जन्म लेकर भी वस्तुत जन्में नहीं होते हैं । जिस दिन सद्‌गुरुकी कृपा और करुणाके द्वारा हमारे अन्दर उस परम ज्ञानका उदय होता है वास्तवमें वही हमारा जन्म दिन होगा । इसका तात्पर्य है कि उस नवयुवतीको १२ साल पूर्व, उसके पतिको ७ साल पूर्व एवं सासुको १० दिन पूर्व ही इस परम तत्त्वकी प्राप्ति हुई थी अतः इसी दिनको उसने जन्म दिन बताया । किन्तु ससूरजीको अभी भी इस ज्ञानकी प्राप्ति न होनेसे नवयुवतीने कहा कि अभी वे जन्मे ही नहीं हैं । सन्तकी बात सुनकर सभी श्रोता बड़े प्रसन्न हुए ।

इससे हमें ज्ञात होता है कि ज्ञानोदय होना ही यथार्थमें जन्म होना है । संसारमें कितने ही ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने देह जन्मको कोई मान्यता नहीं दी है । ब्रह्मज्ञानका उदय ही उन महापुरुषोंके लिए जन्म दिन होता है । ऐसेमें हमारे निजानन्दाचार्य सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजीको ही ले सकते हैं । उनका जन्म मारवाड़ प्रदेशके उमरकोट गांवमें हुआ था किन्तु महामति स्वामी श्री प्राणनाथजीने उनका जन्म नवतपुरी धाममें माना है, महामति श्री प्राणनाथजी वाणीमें कहते हैं,

आये श्री देवचन्द्रजी नवतनपुरी, सुख सबों को देने देह धरी ॥
सो बुद्धजी बुद्ध जागृत ले, प्रकटे पुरी नवतन ॥

निजानन्दाचार्य सद्‌गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज बाल्यावस्थासे ही जिस तत्त्वके अन्वेषणके लिए गृह परित्याग कर निकल पड़े थे । उन्हें चालीस वर्षकी उमरमें नवतनपुरी धामकी पावन धरामें वह ब्रह्मतत्त्व, परमतत्त्वका यथार्थ ज्ञान हुआ । उन्हें तारतमज्ञान मिला । इस प्रकार जागृत

बुद्धिका अवतरण नवतनपुरी धाममें हुआ । इसीलिए उनका वास्तविक जन्म नवतनपुरीमें कहा गया है । इससे स्पष्ट होता है कि परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत श्रीकृष्णका नाम, धाम, स्वरूप एवं लीलाको जब तक हम नहीं जानते तब तक हमारा जन्म व्यर्थ माना जाएगा । जैसे ही इस परम रहस्यात्मक ज्ञानका उदय हमारे हृदयमें होगा तब ही हमारा जन्म होना सफल माना जायेगा ।

महामति स्वामी श्री प्राणनाथजीने भी उसी दिनको धन्य एवं महत्त्वपूर्ण कहा है जिस दिन उन्हें अपने धनीका साक्षात्कार हुआ । जिस दिन उनको पियाके दर्शन हुए एवं मिलन हुआ वही दिन उनके लिए सर्वातिशय श्रेष्ठतम दिन था । महामति स्वयं कहते हैं,

धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पियाजीसों हुओ रे मिलन ।
धनं धंन सखी मेरी हुई पेहेचान, धंन धंन पीउ पर मैं भई कुरबान ॥
धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धंन धंन नेत्र मिलाए रसाले ।
धंन धंन मुख धनीको सुन्दर, धंन धंन चित चुभायो अंदर ॥

अर्थात् वह दिन सबसे महत्त्वपूर्ण एवं अनमोल दिन है जिस दिन मुझे मेरे धामधनी मिले। वह दिन धन्य है जिस दिन मैंने अपने धामधनीको पहचाना और मैं उनके निर्मल एवं पावनसे भी अतिशय पावन चरणोंमें कुर्वान हो गया। इतना ही नहीं मेरी ये चक्षु भी धन्य हैं क्योंकि जिनके द्वारा मैंने मेरे धनीके सौन्दर्य एवं लावण्यके दर्शन किए । जिनके नेत्र कमलसे टपकते प्रेमरसरूपी अमृतविन्दुको मैंने मेरे नेत्रोंमें धारण कर लिया वह घणी धन्य है। इस प्रकार महामति श्री प्राणनाथजी परमात्मा मिलनको ही सर्वस्व मानते हैं। पिया मिलन ही जीवनका ध्येय एवं लक्ष्य होता है यह हमें समझाते हैं ।

हम किसी भी महापुरुषके जीवनके पन्ने उलटकर देखेंगे तो हमें पता कि उन सभीने परमात्मा मिलनको ही अन्तिम ध्येय माना है । भगवान बुद्धने एकबार कहा, हे मेरे मालिक ! हे मेरे गृहकारक अब मेरे लिए अन्य गृह न बनाना । क्योंकि अब मुझे अन्य जन्म नहीं लेना है ।

कहते हैं इस शरीररूपी घरकी अब मुझे कोई जरूरत नहीं है। मैंने असली घरको पा लिया है। अभी तक मैं न जाने कितने घरोंको बदलता रहा किन्तु हंमेशा अतृप्त रहा। कारण, मैं पूर्णरूपेण जन्मा ही नहीं था। इसबार मेरा सही जन्म हुआ अब मरनेका भी भय नहीं है। उन्होंने बुद्धत्व प्राप्त होनेके पश्चाद् ही कहा कि मेरा जन्म हो गया है।

इसीलिए कहा है, यह देवदुर्लभ मानव देह हमें प्राप्त हुआ है इसके द्वारा हमें सर्वशक्ति सम्पन्न, परमधन, परमब्रह्म परमात्माको प्राप्त करना है। हमारे अन्दर जब तक ब्रह्मज्ञानका उदय नहीं होगा है तब तक हम जन्म मरणके फन्दमें ही रहेंगे। क्योंकि इस संसारमें ब्रह्मज्ञान जैसा परम पवित्र अन्य कोई चीज नहीं है। श्रुति कहती है ''**न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते**''। ऐसे परम पवित्र ज्ञानको अपने सद्‌गुरुके द्वारा प्राप्त कर विकारयुक्त हृदयको विकारमुक्त, निर्मल व पवित्र बनाना चाहिए। यही मनुष्य जीवनका परम कर्तव्य है। ब्रह्मज्ञान तारतम ज्ञान ही सभी प्रकारके अन्धकार एवं संशयादिको दूर कर परम प्रकाश एवं मोक्षपद प्रदान करता है। महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं,

ब्रह्माण्ड माहें तारतम सार, एणे टाल्यो सहुनो अंधकार ॥

तेज तारतम ज्योत प्रकाश, करूं अन्धेरी सबको नास ॥

सूचना

धर्मपरायण सुन्दरसाथजी ! प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी नूतन वर्ष १ जनवरी २०१० के दिन श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके वर्तमान आचार्य जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजका प्राकट्योत्सव श्री ५ नवतनपुरी धाममें बहुत ही हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जायेगा। अतः आप सभी सुन्दरसाथजी इस पावन प्रसंग पर पधारकर कार्यक्रमकी शोभा बढ़ायें। हमें चाहिए कि वर्तमान सद्‌गुरुके प्राकट्यके अवसर पर हम उनके पावन चरणोंमें अपनी शुभकामना एवं शुभभावना व्यक्त करें। एवं ''शतं जीवेमः शरदः'' ऐसी प्रार्थना करें।

समाचार दर्पण

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सव – मुंबई

श्री तारतम सागरके १०८ पारायण

सुन्दरसाथजी, हमें अतीव प्रसन्नता है कि आज महामति स्वामी श्री प्राणनाथजीकी उद्घोषणा ''**पसरसी चौदे भवन**'' शनैः शनैः सार्थक होती जा रही है। आज हम देख रहे हैं महामति श्री प्राणनाथजीकी वाणी श्री तारतम सागरका प्रचास प्रसार विभिन्न माध्यमसे सर्वत्र हो रहा है ।

कभी श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महामहोत्सवके माध्यमसे तो कभी विविभन्न महोत्सवके माध्यमसे, कभी जागनी महोत्सवके माध्यमसे तो कभी जागनी मेलाके माध्यमसे, कभी शिबिरादिके माध्यमसे तो कहीं न कहीं किसी न किसी माध्यमसे श्री कृष्ण प्रणामी धर्मका प्रचार प्रसार आज सुन्दर ढंगसे हो रहा है ।

इसी सिलसिलेमें गत २२ नवम्बर २००९ से २८ नवम्बर २००९ पर्यन्त भारतकी महानगरी मुंबईमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सवका विशिष्ट आयोजन सम्पन्न हुआ । श्री राजजी महाराजकी अहैतुकी कृपा एवं श्री कृष्ण प्रणामी धर्म–निजानन्द सम्प्रदायके वर्तमान आचार्य जगद्गुरु श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज, श्री ५ नवतनपुरी धामकी पावनोत्तम निश्रामें आयोजित इस महोत्सवके मुख्य यजमान श्री ५ नवतनपुरी धामके अत्यन्त सेवाभावी एवं धर्मप्रेमी ट्रस्टी श्री तुलसीदास नारणदास ठक्कर एवं श्री गौतम ठक्कर परिवार थे ।

सुन्दरसाथजी, गत कई वर्षोंसे परम पूज्य जगद्गुरु आचार्य महाराजश्रीकी हार्दिक सद्दिच्छा थी की मुंबई महानगरीमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सवका सुन्दर एवं विशिष्ट आयोजन किया जाय जिससे मुंबई निवासी धर्मप्रेमी सद्धर्मपरायण सुन्दरसाथको धर्मलाभका सुअवसर प्राप्त हो सके। इसके लिए श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके शीर्षस्थ सन्त गुरुजनोंका भी सुन्दर उत्साह रहा । शेठ श्री तुलसीदास नारणदासजी परिवारने तन, मनके साथ–साथ सम्पूर्ण आर्थिक सेवाकी भी जिम्मेदारी उठायी जो धर्मप्रतिकी अटूट श्रद्धा, आस्था एवं परम प्रेमका प्रतिफल है ।

समयानुकुल इस महामहोत्सवकी तिथि निश्चित की गई । आयोजन

विशाल होनेसे मंदिरमें यह कार्यक्रम करना असम्भव था । अतः इसके लिए मुम्बईके बाबुलनाथ रोड स्थित सुप्रसिद्ध श्री प्रेमपुरी अध्यात्म विद्या भवनमें यह मंगलमय आयोजन किया गया । **दिनांक २२ नवम्बर २००९ से २८ नवम्बर २००९ पर्यन्त आयोजित इस महोत्सवमें श्री तारतम सागरके १०८ साप्ताहिक पारायणके साथ–साथ, श्री तारतम सागर कथा, श्रीमद्भागवत कथा, श्री वीतक कथा, समाजके लब्धप्रतिष्ठ सन्त गुरुजनोंके प्रवचन एवं भजन संध्यादि आत्मरञ्जनात्मक सुन्दर कार्यक्रम हुए** । सुन्दरसाथने सभी कार्यक्रमोंका पूर्णरूपसे लाभ उठाया ।

श्री प्रेमपुरी अध्यात्म विद्या भवनके पांचवी भोमके वातानुकुलीन विशाल सभागार (सभाखण्ड) को पारायण मंडपके रूपमें सुन्दर ढंगसे श्रृंगार किया गया था । जिसमें सुन्दरसाथकी सुविधाको ध्यानमें रखकर पारायणकी व्यवस्था टेबल–कुर्सी पर की गई थी ।

प्रारम्भ : दिनांक २२ नवेम्बर २००९ के प्रातः भक्तिमय वातावरणके मध्य सुन्दर रूपसे सुशोभित पारायण मंडपमें समस्त सुन्दरसाथ एवं सन्तगुरुजनोंकी पावन उपस्थितिमें वन्दना एवं प्रार्थनाके पश्चात् सेवापूजाका प्रेमपूर्वक गायन हुआ । पारायण प्रारम्भकी महाआरती सर्वप्रथम सन्तगुरुजनों एवं यजमान परिवारोंने की । महाआरती पश्चात् **श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज**के मुखारविन्दसे **महामति श्री प्राणनाथजीकी कल्मषहारिणी, मंगलकारिणी, भवजल तारिणी एवं विश्व कल्याण कारिणी वाणी श्री तारतम सागरके १०८ पारायणका मंगलमय शुभारंभ हुआ** । इस अनमोल क्षणमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके उच्चतम सन्तजनोंमें **सन्तशिरोमणि स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज–वृन्दावन धाम, महाराज श्री मोहनप्रियाचार्यजी, मंगलधाम कालिम्पोंग** प्रमुख थे । इस अवसर पर

श्री ५ नवतनपुरी धाम तथा अन्य प्रतिष्ठित स्थानोंसे भी अनेक सन्तजन एवं विद्वद्जनोंकी सुन्दर उपस्थिति थी। परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने पारायण प्रारम्भके पूर्व अपने वक्तव्यमें कहा–हम सभीके ऊपर श्री राजजी महाराजकी असीम कृपा है। ''**हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत**'' इस पावन अवसरकी प्राप्ति धामकी सुहागिन ही कर पाती है। हमें इस मंगलमयी वाङ्मय वाणीका पाठ–पारायणके साथ–साथ इसकी रसमयी चर्चामें अवगाहन करनेका सुन्दर अवसर मिला है। यह सभी श्री राजजी महाराजकी अहैतुकी कृपाका ही फल है । महामति श्री प्राणनाथजीकी वाणी ''**पसरसी चौदे भवन**'' ''**सुख शीतल करुं संसार**'' जैसे अनमोल महावाक्यको

न्यूनाधिक रूपमें चरितार्थ करना हम सभीका परम कर्तव्य होगा । सुन्दरसाथमें धर्म भावना दृढ़बने, श्री राजजी महाराज के स्वरूप, लीला एवं धामके विषयमें न्युनाधिक जानकारी सभी सुन्दरसाथको प्राप्त हो। ''**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' **हम तुम एक वतनके, अपनी रूह नहीं दोर्य**'' जन–जनके मानस पटल पर यह उच्च भावना जाग उठे इसके लिए ही समय समय पर ऐसे आयोजन किये जाते हैं। आज हम ऐसी ही पावन घडी पर उपस्थित हैं। जिसका पूर्णरूपेण लाभ लेकर हम अपने जीवनको धन्य बनायें।

सभामंडप : श्री प्रेमपुरी अध्यात्म विद्याभवनके अत्याधुनिक वातानुकुलित चतुर्थ भोमको सभामंडप बनाया गया था । सभामंडपमें भी सुन्दरसाथको बैठनेके लिए कुर्सीकी व्यवस्था की गयी थी। पारायण प्रारम्भ पश्चात् ठीक १०.०० बजे परम पूज्य आचार्य महाराजश्री, स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज, श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराज तथा उपस्थित सन्त गुरुजनोंने दीप प्रज्वलन कर सभाका मंगल उद्घाटन किया।

सर्वप्रथम भजन एवं स्तुति गायन पश्चात् **परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने श्री तारतम सागरकी चरचा कर उपस्थित संतो एवं सुन्दरसाथको आशीर्वाद प्रदान किया ।**

श्री तारतम सागर कथा : प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकालीन सत्रमें समयानुकुल परम पूज्य परम वन्दनीय आचार्य महाराजश्री अपनी धीर एवं गम्भीर वाणी द्वारा श्री तारतम सागरकी चरचा करते थे। पूज्य आचार्य महाराजश्रीने श्री तारतम सागरके १४ ग्रन्थोंका परिचय, उसमें निहीत विषय एवं अनेक प्रेरक प्रसंगके माध्यमसे सुन्दरसाथ को वाणी चर्चा द्वारा आनन्द विभोर कराया । एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

श्रीमद्भागवत कथा : प्रतिदिन अपराह्न ४.३० से ७.३० पर्यन्त

सन्तशिरोमणि स्वामी श्री सदानन्दजी महाराजके द्वारा पावनानां च पावनम् श्रीमद्भागवत भक्ति भागीरथीकी संगीतमयी कथा होती थी। कथा प्रसंगानुरूप वामन अवतर, श्री कृष्ण प्राकट्य, नन्दमहोत्सव, महारास एवं रुक्मिणि विवाह आदिकी मनोहारिणि झांकियाँ भी बनाई गई थी। इस तरहसे अपनी मधुर एवं सरल शैली द्वारा उन्होंने श्रीमद्भागवत कथाके माध्यमसे सुन्दरसाथको श्री कृष्ण प्रणामी धर्ममें श्रीमद्भागवतका महत्त्व समझाते हुए परब्रह्म लीलारसमें अवगाहन कराया।

श्री वीतक कथा : प्रतिदिन प्रातःकालीन सभामें समयानुरूप परम आदरणीय श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराजने अपने ओजस्वी वाणी द्वारा उपस्थित सुन्दरसाथको संक्षिप्त रूपसे श्री वीतक कथा सुनाई।

प्रवचन : समयानुरूप सभाको सम्बोधन करने वाले समाजके लब्ध प्रतिष्ठित सन्तजनोंमें विशेष कर **आचार्य श्री १०८ सूर्यनारायणदासजी महाराज**, महामंगलपुरी धाम–सुरत, **परम आदरणीय श्री जगतराजजी महाराज**, श्री

कृष्ण प्रणामी मन्दिर बाबा दयाराम धाम करनाल–हरियाणा, **स्वामी श्री तारतम ज्योतिजी महाराज**–श्री कृष्ण प्रणामी मूलमिलावा मानव मंदिर–सुरत, श्री नारायण स्वामी–श्री कृष्ण प्रणामी तपोवन सेवाश्रम–पंचमहाल, श्री प्रकाशचन्द्रजी शास्त्री–श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर राजधाम जैताना–राजस्थान, श्री लीलाधर शास्त्री–श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर दीव, श्री राजेन्द्र शास्त्री–श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर–अहमदाबाद, श्री पुरुषोत्तम शास्त्री–श्री कृष्ण प्रणामी सेवाश्रम–शामलाजी, श्री प्रमोद सुधाकर–बाबा दयाराम धाम–करनाल, पुजारी श्री देवकरण गांधी, पं श्री रूपराज शर्माजी, श्रीमती रञ्जना दूबे–श्री ५ पद्मावती पुरी धाम,पन्ना श्री एच.के.एल आहुजा–दिल्ही, श्री नन्दकिशोर शास्त्री–इलाहाबाद आदि थे ।

भजन संध्या : प्रतिदिन विभिन्न स्थानोंसे आये हुए संगीतकार द्वारा वाणी गायन एवं भजन–कीर्तनादिसे सभामंचका वातावरण भक्तिमय बनता था । उन संगीतकारोमें विशेष कर : श्री राजकुमार उपाध्याय–सिलीगुड़ी, श्री प्रमोद सुधाकर,श्री सोहनलालजी प्रणामी–करनाल, श्री चन्दन शास्त्री, श्री राजीव लोचन, श्री कृष्ण शास्त्री–श्री ५ नवतनपुरी धाम जामनगर, श्रीमती शशी मित्तल–हरियाणा, सुश्री भानु प्रणामी, सुश्री गीता प्रणामी–श्री बाईजीराज आश्रम–धोराजी, सुश्री मानसी राजेश धामी, श्रीमती गीताबेन ठक्कर–मुम्बई आदि थे ।

सेवापूजा : प्रतिदिन पारायण मंडपमें प्रातः एवं सायं कालीन सेवा पूजा सस्वर गायनके साथ–साथ भाव एवं भक्ति पूर्वक की जाती थी । इसमें विशेषकर श्री ५ नवतनपुरी धामके पुजारी श्री यमनाथ शास्त्रीजी, श्री श्याम सुन्दर शास्त्री, श्री चन्दन शास्त्री, श्री प्रमोद सुधाकर एवं श्री राजीव लोचनजी थे ।

प्रणामी रत्न एवं मंगल पुरस्कार सन्मान समारोह : दिनांक २७

नवम्बर २००९ के दिन श्री प्रणामी विश्वक परिषदकी ओरसे सेवा, भक्ति एवं प्रेम

भावनासे ओतप्रोत श्री तुलसीदास भाई ठक्करको ''प्रणामी रत्न'' एवं प्रणामी साहित्यमें विशेष योगदान देनेवाले समाजके विद्वान श्री गुलजारीलाल सिडाना एवं गिरधारीलाल सिडानाको ''मंगल पुरस्कार'' से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया ।

पूर्णाहुति : दिनांक २८ नवम्बर २००९ प्रातः ८.३० बजे हजारों

सुन्दरसाथ एवं समाजके शीर्षस्थ सन्तगुरुजन एवं यजमान परिवारकी उपस्थितिमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने श्री तारतम सागरके अन्तिम दो प्रकरणोंका पाठ कर पारायणका समापन किया । पूज्य आचार्य महाराजश्रीके

मुखारविन्दसे समापनकी चौपाई निकलते ही सुन्दरसाथने उच्च स्वरमें जय घोष करते हुए नारियल फोड़कर वधाई देते हुए खुशियाँ मनाई । अन्तमें पूज्य आचार्य महाराजश्रीने उपस्थित संतों एवं सुन्दरसाथको सम्बोधन करते हुए सभीको आशीर्वाद प्रदान किया । पूर्णाहुतिके पावन अवसर पर विशेष कर सन्तशिरोमणि स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज, श्री धाम वृन्दावन, श्री जगतराजजी महाराज–करनाल, श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराज–मंगलधामके साथ–साथ अनेक सन्तजन एवं विद्वद्जनोंकी पावन उपस्थिति थी ।

आशीर्वाद : अन्तमें श्री राजजी महाराजकी असीम अनुकम्पा एवं परम

पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी पावन निश्रामें जिन्होंने इतना बड़ा कार्यका भार अकेले उठाया एवं तन, मन एवं धनसे रात दिन एक कर इस कार्यको सफल बनाया ऐसे धर्मपरायण सेवापरायण एवं कर्तव्यपरायण **श्री तुलसीदासजी, माताजी कान्ताबेन, श्री गौतमभाई एवं श्रमती मीताबेन ठक्करको सर्वप्रथम परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने शाल ओढ़ाकर श्री ५ नवतनपुरी धामका आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य श्री सूर्यनारायण दासजी महाराजने– श्री**

५ महामंगल पुरी धामका एवं स्वामी श्री सदानन्दजी महाराजने–श्री ५ पद्मावतीपुरी धामका आशीर्वाद प्रदान किया । इसी तरह सभी उपस्थित सन्तगुरुजनोंनें भी ठक्कर परिवारको ढेर सारा आशीर्वाद दिया। सभामंचका कुशल संचालन **शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्य** द्वारा हुआ।

इस प्रकार श्री राजजीकी असीम कृपा एवं पूज्यपाद् जगद्गुरु आचार्य महाराजश्रीकी पावनोत्तम निश्रामें आयोजित यह महोत्सव भव्य एवं सुन्दर ढंगसे सम्पन्न हुआ।

प्रस्तुति : शास्त्री लक्ष्मण चैतन्य

पक्की रसोईकी सेवा

०१.श्रीमती भावनाबेन ललितभाई अकबरी	जामनगर
०२.श्री नानालालभाई अर्जुनभाई पटेल	मोरबी
०३.धा.वा. बचुभाई हीराभाई सिदपरा	राजकोट
०४.श्री हिमांशुभाई पटेल	सीमरडा
०५.श्री प्रभुभाई केशाभाई दुधागरा	मजोठ
०६.श्री सामतभाई एभाभाई मोढवाडीया	जेतपुर
०७.धा.वा. हीराबेन नरसिंहभाई पटेल	हिम्मतनगर
०८.श्री करशनभाई लक्ष्मणभाई मोढा	कोटडा
०९.श्री अमृतलाल रायचंदभाई पटेल	आमोदरा
१०.श्री अनिशषभाई रघुभाई वेकरीया	राजकोट
११.धा.वा. बाबुभाई चकुभाई सुतरीया	सरवणीया
१२.श्री जगदीशभाई पुरुषोत्तमदास पटेल	सलाल
१३.श्री विनोदभाई झीणाभाई भंडेरी	जामनगर
१४.श्री लखधीरसिंह जेठुभा झाला	राजकोट
१५.श्री वैभवभाई बाबुलाल काकडीया	अहमदावाद
१६.धा.वा. रंभाबेन खोडाभाई सावलिया	अलीयावाडा
१७.परमहंस बावाजी श्री लक्ष्मीदासजी	श्री ५ नवतनपुरी धाम
१८.धा.वा. केशुरभाई वकमातभाई भेटारीया	चिखलोदरा
१९.श्री जयन्तीभाई शंभुभाई कुंभाणी	मोटा-भमोदरा
२०.धा.वा. भाणजीभाई भीमजीभाई पटेल	जामनगर
२१.श्री ब्रह्मक्षत्रीय समाजवाडी	जामनगर
२२.श्री प्रभुलाल हरजीभाई पित्रोडा	मोविया
२३.श्रीमती चेतनाबेन जयेशभाई अमन	रूपाल
२४. श्री राजश्यामाजी भरोसेसे	-
२५.श्री राजेशभाई मणीलाल चौहाण	सीनोग्रा

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सव मुंबईमें श्रीमद्भागवत कथा करते हुए
स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज एवं कार्यक्रमकी अन्य झांकियाँ

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर भोपाल (म.प्र) में आयोजित १०८ पारायण,
शोभायात्रा एवं परम पूज्य आचार्य महाराजश्री द्वारा पारायण शुभारम्भके दृश्य

श्री आनन्दबाबा सेवा संस्था जामनगर द्वारा आयोजित
सार्वजनिक समूह यज्ञोपवित महोत्सवमें उद्बोधन करते हुए श्री सुरेन्द्रजी

RNI No. GUJ BIL /2006/18311 Registration No. GJN-1 / 2009-2011

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सव मुम्बईमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्री
एवं स्वामी श्री सदानन्दजी महाराजके साथमें यजमान परिवार

श्री तुलसीदासभाई ठक्करको ''प्रणामी रत्न'' पुरस्कारसे सम्मानित करते हुए सन्त गुरुजन

महोत्सवमें पारायण पढ़ते हुए यजमान परिवार बायेंसे शेठ श्री तुलसीदासभाई,
श्रीमती कानाबेन, पुत्रवधु श्रीमती मीताबेन तथा सुपुत्र श्री गौतमभाई ठक्कर

सभामंचमें श्री राजजी महाराजकी महाआरती करते हुए यजमान परिवार एवं सुन्दरसाथजी

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)